श्रद्धाका साहस

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग १०

सम्पादक – प्यारेलाल

अंक ४२

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २४ नवम्बर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

सच्चे दिलसे क़बूल कीजिये

चाँदपुर ही में गांधीजीने पहले पहल पूरबी बंगालकी वारदातोंके बारेमें वहाँके मुसलमानोंसे सीधी बातचीत शुरू की थी। ७ नवम्बरको सुबह चौमुहानीके लिअे रवाना होनेसे पहले टिपरा जिलेके कअी खास-खास मुस्लिम लीगियोंका अेक डेपुटेशन चाँदपुरमें 'कीवी' नामके स्टीमर पर गांधीजीसे मिला था।

अुनमेंसे अेकने कहा कि चाँदपुर सब-डिविजनमें दंगे बिलकुल नहीं हुअे। अखबारोंके झूठे प्रचार या प्रोपेगैण्डासे घबराकर ही भागकर आये हुअे ये अितने लोग चाँदपुरमें अिकट्ठा हो गये हैं। मुसलमानोंके हाथों मारे गये हिन्दुओंकी तादाद सिर्फ़ १५ थी, जब कि फ़ौजियोंके गोलीबारसे अिससे दुगुने मुसलमान मारे गये थे। अिन फ़ौजियोंमें ज़्यादातर फ़ौजी हिन्दू थे।

डेपुटेशनके अेक दूसरे अेम० अेल० अे० मेम्बरने अिस बातकी सख़्त शिकायत की कि हिन्दू लोग आज भी घर छोड़कर भाग रहे हैं। हिन्दू कार्यकर्त्ता अुन्हें अैसा करनेके लिअे बढ़ावा देते हैं, और अुन्हें वापस अुनके गाँवोंमें बसानेके काममें 'रुकावट' डालते हैं। अिस तरह वे मुस्लिम लीगी सरकारको बदनाम करना और हुकूमतको अपंग बना देना चाहते हैं।

नसरुल्ला साहब और अब्दुल रशीद साहबके साथ शमसुद्दीन साहब भी अिस मीटिंगमें हाज़िर थे। अुन्होंने बीच ही में कहा — "ज़िलेमें दूसरी जगह जो कुछ हुआ अुसको छोड़कर सिर्फ़ चाँदपुरके बारेमें बहस करनेसे कोअी फ़ायदा नहीं। मौजूदा मसलेके साथ फ़ौजी गोलीबारका हवाला देना भी अुतना ही ग़ैरमौज़ूँ है।"

जब वे लोग अपनी बात कह चुके, तो गांधीजीने जवाबमें कहा — "अगर आपकी अिन बातोंको बिलकुल सही और ठीक मान लिया जाय, तो अुसका यह मतलब होगा कि मुसलमानोंने कोअी ज़्यादतियाँ नहीं कीं। मुसलमानोंको सतानेवाली पुलिस और फ़ौजकी ज़्यादतियोंने ही अुन्हें हिन्दुओं पर ज़ुल्म ढानेके लिअे अुकसाया। अिसलिअे लोगोंमें घबराहट फैलानेवाले हिन्दुओंके साथ पुलिस और फ़ौजवाले ही सच्चे मुजरिम हैं। लेकिन अिस वाहियात बातको मानेगा कौन? अगर यहाँ कोअी दंगा-फ़साद हुआ ही नहीं, तो फ़ौजको बुलानेकी ज़रूरत ही क्यों पड़ी? २०–२५ हिन्दुओंका अेक डेपुटेशन आज सुबह मुझसे मिला था। अुन्होंने टिपरा और नोआखालीमें हुअी वारदातोंकी दर्दनाक कहानियाँ मुझे सुनाअीं। जबसे मैं बंगाल आया हूँ, तभीसे मुझे अिस तरहकी बातें बराबर सुननेको मिलती रही हैं। मुस्लिम लीगियोंने भी यह तो क़बूल किया है कि पूरबी बंगालमें हिन्दुओं पर भयंकर ज़ुल्म ढाये गये हैं। आँकड़ोंके बारेमें अुनकी शिकायत थी। वे कहते थे कि अखबारोंमें ज़ुल्मके शिकार बने लोगोंकी तादाद बहुत बढ़ा-चढ़ाकर दिखाअी गअी है। लेकिन आँकड़ोंसे मुझे कोअी मतलब नहीं। अगर भगाने, जबरन् धरम बदलने या शादी करनेका अेक भी मामला हुआ हो, तो वह अीश्वरसे डरनेवाले किसी भी मर्द या औरतका सिर शर्मसे झुका देनेके लिअे काफ़ी है।"

गांधीजीने अुनसे कहा — "मैं कोअी बात छिपाअूँगा नहीं। जो कुछ जानकारी मुझे मिलेगी, वह सब मैं मिनिस्टरोंके सामने रख दूँगा। मैं आपकी सद्भावना और विश्वासको बढ़ानेके लिअे ही यहाँ आया हूँ। अिस काममें मैं आपकी मदद चाहता हूँ। पुलिस और फ़ौजकी मददसे मैं शान्ति क़ायम कराना नहीं चाहता। अूपरसे लादी गअी शान्ति सच्ची शान्ति नहीं होती। मैं पूरबी बंगालके लोगोंको अपने घर-बार छोड़कर भागनेके लिअे भी नहीं कहूँगा। अगर मुस्लिम लीगी वज़ारतको बदनाम करनेके लिअे ही, जान-बूझकर, लोगोंको बड़ी तादादमें अपना घर-बार छोड़कर भागनेके लिअे कहा गया है, तो जिन्होंने यह सब किया है, अुन्हें लेनेके देने पड़ जायँगे। लेकिन मैं अिस पर विश्वास नहीं कर सकता। मेरी रायमें अिसका सच्चा रास्ता यही है कि सारी बात साफ़-साफ़ क़बूल कर ली जाय। सारी दुनियाको अपनी तरफ़ अँगुली अुठानेका मौक़ा देनेकी बनिस्बत यह कहीं अच्छा है कि हम ख़ुद अपनी ग़लतीको बड़ी शक्लमें दुनियाके सामने पेश कर दें। भगवान् पापी को कभी माफ़ नहीं करता।"

अिस पर जो साहब सबसे पहले बोले थे, अुन्होंने यह बात क़बूल की कि मैंने आग और लूट-मारकी कुछ वारदातोंके बारेमें सुना है। लेकिन लोगोंके घर छोड़कर भाग जानेके बाद ही यह लूट-मार हुअी थी। सूने घरोंको देखकर गुण्डे अुन्हें लूटनेके अपने लालचको दबा न सके।

गांधीजीने तुरत पूछा — "क्या वजह है कि लोग घर-बार छोड़कर भागते हैं? मामूली हालतमें लोग अैसा नहीं करते। हर शख़्स यह जानता है कि सूने और अरक्षित घरको कोअी-न-कोअी ज़रूर लूट लेगा। महज़ मुस्लिम लीगको बदनाम करनेके लिअे कोअी अपना सब कुछ गवाँना क्यों पसन्द करेगा?"

अिस पर डेपुटेशनके अेक और सदस्य ने कहा कि पूरी आबादीके सिर्फ़ अेक फ़ीसदी लोगोंने ही गुण्डापन किया था। बाक़ीके ९९ फ़ीसदी लोग सचमुच भले लोग हैं, और वे किसी तरह अुन वारदातोंके लिअे ज़िम्मेदार नहीं।

गांधीजीने कहा — "अिस चीज़को अिस तरह देखनेका यह तरीक़ा ठीक नहीं। अगर ९९ फ़ीसदी लोग भले थे, तो अुन्हें चाहिये था कि वे जो कुछ हुआ अुसकी अमली मुख़ालिफ़त करते। अुस हालतमें अेक फ़ीसदी लोग कुछ न कर पाते, और वे बड़ी आसानीसे पकड़े जा सकते थे। भले लोगोंको अमली तरीक़ेसे बुराअीकी मुख़ालिफ़त करनी चाहिये, तभी वे भले कहलानेके हक़दार हो सकते हैं। खड़े-खड़े तमाशा देखना कोअी अच्छी चीज़ नहीं। अगर वे अैसा करना नहीं चाहते, तो अुन्हें यह बात खुले आम कहनी चाहिये, और मुस्लिम बहुमतवाली जगहोंमें रहनेवाले तमाम हिन्दुओंसे कह देना चाहिये कि वे वहाँसे चले जायँ। लेकिन जहाँ तक मैं समझ पाया हूँ, आप लोगोंका यह मंशा नहीं है। क़ायदे-आज़मने कहा है कि पाकिस्तानमें अल्पसंख्यकोंके साथ पूरा-पूरा अिन्साफ़ किया

www.vinoba.in

जायगा । कहाँ है वह अिन्साफ़ ? आज हिन्दू मुझसे पूछते हैं कि पाकिस्तानमें अुनके साथ जैसा सलूक होनेवाला है, क्या नोआखालीकी वारदातें अुसीका नमूना हैं ? मैंने अिस्लामका अध्ययन किया है । जब मैं दक्खिनी अफ़्रीकामें था, तो मेरे मुसलमान दोस्त मुझसे कहा करते थे — ‘ आप क़लमा पढ़कर हिन्दूधरमको भूल क्यों नहीं जाते ? ’ मैं अुनको जवाब दिया करता था कि मैं कलमा खुशी-खुशी पढ़ सकता हूँ, लेकिन हिन्दूधरमको कभी नहीं भूल सकता । मेरे दिलमें हज़रत मुहम्मदके लिअे किसी मुसलमानसे कम अिज़्ज़त नहीं है । लेकिन अधिकार जताने और दबाव डालनेके तरीक़े अख़्तियार करनेसे मज़हबकी तरक़्क़ी होनेके बदले अुलटे वह नापाक होता है ।”

शमसुद्दीन साहबने गांधीजीसे अित्तफ़ाक़ करते हुअे क़ुरानकी अेक आयत पढ़ी, जिसका मतलब था कि मज़हबके मामलेमें कोअी ज़बरदस्ती नहीं की जा सकती । अुन्होंने आगे कहा — “ मैं मुसलमानोंसे कह चुका हूँ कि अगर आप पाकिस्तान चाहते हैं, तो आपको चाहिये कि आप अल्पसंख्यक जातिके साथ अिन्साफ़ करें और अुसका विश्वास हासिल करें । मगर जैसे काम आप लोगोंने किये हैं, अुनसे तो आपने पाकिस्तानकी हत्या ही की है ।”

अपनी बात फिर शुरू करते हुअे गांधीजीने कहा — “ नोआखाली ज़िलेके बड़े हाकिम मि० मैक् अिनरनीने अेक परचा निकालकर अैलान किया है कि पिछले क़ौमी दंगोंके शुरू होनेके बाद जो हिन्दू मुसलमान बने हैं, अुनके बारेमें जब तक यक़ीन दिलानेवाला अिससे अुलटा सबूत नहीं मिलेगा, तब तक यही समझा जायगा कि वे ज़बरदस्ती मुसलमान बनाये गये हैं, और दर असल वे हिन्दू ही हैं । अगर सारे मुसलमान अैसा ही अैलान कर दें, तो आजके सवालको हल करनेमें बड़ी मदद मिले । अगर किसीको कलमा पढ़नेकी दिली ख़्वाहिश है, तो अुसका लोगोंके सामने दिखावा क्यों होना चाहिये ? सच्चे दिलसे किये जानेवाले धर्म-परिवर्तनके लिअे अीश्वरके सिवा किसी दूसरे गवाहकी ज़रूरत नहीं । जो आदमी मुँहसे कलमा पढ़ता है, मगर काम अैसे करता है, जो मामूली तहज़ीबके भी खिलाफ़ हैं, वह अिस्लामको नहीं मानता, बल्कि अुसका मज़ाक अुड़ाता है ।” यहाँ गांधीजीको प्लीमथ सम्प्रदायकी याद आ गअी । अिस सम्प्रदायके मित्रोंने गांधीजीसे अीसाअी बननेका आग्रह किया था और कहा था कि अगर वे अीसाअी बन गये, तो अुन्हें अपनी मरज़ीके मुताबिक़ सब कुछ करनेकी छुट्टी मिल जायगी, क्योंकि अीशु अपने माननेवालोंको सारे पापोंसे बचा देते हैं । “ अिसके खिलाफ़ ‘ न्यू टेस्टामेण्ट ’ की यह कविता साफ़ लफ़्ज़ोंमें कहती है कि — ‘ सिर्फ़ मुँहसे मेरा नाम रटनेवाला हरअेक शख़्स मेरे पास नहीं पहुँचता । ’ अिसलिअे मुसलमान नेताओंको समझना चाहिये कि ज़बरदस्ती कलमा पढ़नेसे कोअी ग़ैर-मुसलमान, मुसलमान नहीं बन जाता । अिससे तो अुलटे अिस्लामकी ही तौहीन होती है ।”

डेपुटेशनके अेक सदस्यने, जो अभी तक कुछ नहीं बोले थे, दलील की — “ जो कुछ हुआ है, वह सब झूठे प्रचारका नतीजा है ।” गांधीजीने जवाब दिया — “ हम झूठे प्रचारको ही अिसके लिअे दोषी न ठहरायें । अगर हम सब ठीक रास्ते पर हैं, तो झूठा प्रचार अपने-आप नाकाम हो जायगा ।”

आख़ीरमें डेपुटेशनके अेक सदस्यने कहा — “ देहातमें फिरसे शान्ति और विश्वास क़ायम करनेके लिअे हम सब हिन्दू नेताओंके साथ वहाँ जानेके लिअे तैयार हैं, लेकिन हिन्दू नेता हम पर भरोसा नहीं करते ।”

गांधीजीने जवाब दिया — “ कोअी हर्ज नहीं । आपके अिस प्रस्तावको मैं ख़ुशीसे मंज़ूर करता हूँ । हम और आप ज़िलेके हर गाँव और हर घरमें जायँगे और वहाँ फिरसे अमन और विश्वास क़ायम करेंगे ।” दत्तपाड़ा, १५-११-’४६

(अंग्रेजीसे) प्यारेलाल

नागरीके स्वर

नागरी अक्षरोंमें स्वरोंकी दो दो शकलें सीखनी पड़ती हैं । व्यंजनके साथ मिल जानेसे स्वर अलग-अलग मात्राओंके रूप लेते हैं । और जब व्यंजनके बिना अकेले आते हैं, तब स्वतंत्र अक्षरकी तरह लिखे जाते हैं । दो दो रूप सीखने पड़ें, यह नाहक़का बोझा है । किसानों, मज़दूरों और आदिवासियोंमें साक्षरताका प्रचार करनेवालोंको अिस कठिनाअीका पूरा खयाल है ।

नागरी टाअिपराअिटर बनाते समय स्वरोंके अक्षर और मात्रा अैसे दो दो रूप देनेसे टाअिपकी संख्या बढ़ती है, और टाअिपराअिटर भारी हो जाता है । छापाख़ानेमें भी यही कठिनाअी रहती है, हालाँकि वहाँ विशेष कष्ट नहीं होता ।

असलमें देखा जाय तो नागरीके स्वर नीचे लिखे मुताबिक़ हैं —

ा, ाा, ि, ी, ु, ू, ृ (ऋ), े, ै, ो, ौ, ं, ः

ये स्वर आधारके बिना अैसेके अैसे नहीं रहते ।

जब क, ख, ग, घ, च, ज, ण, त, थ, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, आदि व्यंजनोंके साथ ये आते हैं, तब हमें ककहरा यां बारहखड़ी मिलती है । जब व्यंजनका अभाव होता है, और व्यंजनके बिना स्वतंत्र रूपसे ये स्वर आते हैं, तब व्यंजनका अभाव दिखानेवाला-स्वराधारका चिह्न अ हरअेक स्वरको दिया जाता है । अिस तरहसे स्वरोंके रूप ये हो जाते हैं —

अ, आ, अि, अी, अु, अू, अृ (=ऋ), अे, अै, ओ, औ, अं, अः ।

अिस तरह बच्चोंको और नौसिखुओंको समझाना आसान हो जाता है । और, टाअिपराअिटरमें इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ अितने अक्षर बच जाते हैं । अिन स्वरोंमें ऐ के अूपर अेक ही मात्रा होती है, और बारहखड़ीमें दो मात्रायें दी जाती हैं । बच्चोंके लिअे यह व्यवस्था अूटपटाँग-सी मालूम होती है । कभी-कभी वे ए, ऐ,को ऐ, ऐ लिख देते हैं, और अिस वैज्ञानिक वृत्तिके लिअे बेचारे डाँटे या पीटे जाते हैं ।

स्वरोंके ये नये रूप वैज्ञानिक तो हैं ही । अिसके अलावा अिनके पीछे कुछ परम्परा भी है ।

प्राचीन पोथियोंमें कहीं-कहीं ओका रूप ओ॰ पाया जाता है । (अिसी पर चन्द्रबिन्दु देकर हमारा ॐ बना है ।)

अे, अैके रूप भी पुरानी पोथियोंमें पाये जाते हैं । गुजरातीमें और महाराष्ट्रकी मोड़ी लिपिमें अे, अैके रूप अिसी ढंगके हैं ।

अिसलिअे अि, अी, अु, अू, और अृ ये रूप भी प्रचलित करनेसे सब स्वरोंमें वैज्ञानिकता आयेगी, और साक्षरता-प्रचारमें और मुद्रा-लेखनमें (टाअिप-राअिटिंगमें) सहूलियत होगी ।

चन्द शास्त्री लोग पाणिनीय स्वर-सन्धियोंका हवाला देकर अिन नये रूपोंको अशास्त्रीय बतलाते हैं । लेकिन अुनकी अिस दृष्टिसे ओ, औ, अशास्त्रीय सिद्ध होते हैं, अिस तरफ़ अुनका ध्यान नहीं जाता ।

ये नये रूप जिन लोगोंने चलाये हैं, वे संस्कृत व्याकरण जानते हैं, लिपिका अितिहास जानते हैं, परम्परासे परिचित हैं । महाराष्ट्र-साहित्य-परिषद्, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, आदि संस्थाओंने लिपि-सुधार-समितियाँ नियुक्त करके अिस सुधारकी काफ़ी चर्चा की है और अपनी अनुकूलता प्रकट की है । श्री सावरकरजीने अिस सुधारका ज़ोरोंसे प्रचार किया है । महाराष्ट्रमें अिस सुधारका स्वीकार वेगसे हो रहा है । बम्बअी सरकारने अिसे मान्यता दी है । गुजरात-साहित्य-परिषद्ने अपने कराचीके अधिवेशनमें अिस सुधारको स्वीकार किया है । श्री किशोरलाल मशरूवाला और श्री विनोबा भावेकी स्वीकृति मिलनेके बाद पूज्य श्री गांधीजीने अिस सुधारको स्वीकार करके अिसे ‘ हरिजनसेवक ’ में चलाया है । मैं तो २० बरससे अिस सुधारका पुरस्कार करता आया हूँ ।

वर्धा, २७-१०-’४६ काका कालेलकर

www.vinoba.in

घुड़दौड़ और फुटबॉलका जुआ बन्द किया जाय

जुआ खेलनेकी वृत्ति मनुष्यके स्वभावमें हमेशा पाअी गअी है। वेदोंके जमानेमें भी जुआरी मौजूद थे। अुनको नजरमें रखकर ऋषि कवश अैलूश ऋग्वेद (१०-३४-१३)में कहते हैं—

अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व।

पासोंसे जुआ मत खेलो, बल्कि खेती करो।

महाभारतके जमानेमें क्षत्रियोंको जुआ खेलनेकी आदत थी, और अपनी बेवकूफ़ीकी वजहसे वे यह भी मानते थे कि द्वन्द्वयुद्धकी चुनौतीकी तरह जुअेकी चुनौतीको मंजूर करना भी अुनका फ़र्ज है।

आहूतो न निवर्तेत द्यूतादपि रणादपि।

लेकिन बादमें धीरे-धीरे यह हालत सुधरी, और जब ब्रिटिश हुकूमत यहाँ क़ायम हुअी, तब हमारे मुल्कके सामने शराबख़ोरीकी तरह जुअेका सवाल खास तौरपर पेश नहीं था।

अंग्रेज अपने साथ घुड़दौड़का जुआ और सट्टेका बाजार हिन्दुस्तानमें लाये। लेकिन शर्त बदनेका बहुत ज़्यादा चलन हमारे मुल्कमें न होनेसे अुसके बुरे असरके बारेमें हम कोअी फ़ैसला नहीं दे सकते। मगर अिसकी बुराअीको समझनेवाले विश्वसनीय ब्रिटिशरोंका कहना है कि बहुत ज़्यादा शराब पीनेकी आदतसे समाजको जितना नुक़सान पहुँचता है, अुससे भी ज़्यादा नुक़सान अुसे शर्त बदनेकी बुराअीसे पहुँचता है (हुग मार्टिनकी 'क्राअिस्ट अेण्ड मनी'नामकी किताबसे, अेस० सी० अेम०)। अिस आदतसे पैदा होनेवाली आम बुराअियोंको, और कमजोर मनवाले लोगोंके सामने खड़े होनेवाले लालचके गहरे खतरेको ध्यानमें रखकर मि० मार्टिन कहते हैं कि बहुत ही छोटी और किसी मौक़ेसे कोअी शर्त बदना भी अिष्ट नहीं। अुनकी रायमें शराबख़ोरीको क़तअी छोड़ देनेके लिअे दी जानेवाली दलीलें शर्त बदनेके रिवाजको और भी मजबूतीसे लागू होती हैं। चर्चको चाहिये कि वह भिखारियोंके लिअे खोली जानेवाली लॉटरियोंका समर्थन न करे। अस्पतालोंके लिअे लॉटरियाँ खोलना भी अिष्ट नहीं। अिससे "अच्छे कामके लिअे दान देनेकी भावनाका नाश होता है"।

शर्त बदनेकी प्रथाके खिलाफ़ मि० मार्टिनको जो कुछ कहना था, वह अुन्होंने अेक ही वाक्यमें कह डाला है—"किसी भी वाजिब सौदेमें दोनों पार्टियोंको फ़ायदा होता है; शर्त बदनेके रिवाजमें अेक पार्टीको बदलेमें वग़ैर कुछ दिये ही फ़ायदा होता है।" शर्त बदनेमें और चोरी करनेमें अितना ही फ़र्क़ है कि शर्त बदनेवाला, अगर हारता है, तो अपनी राजी-खुशीसे जीतनेवालेको पैसा देना क़बूल करता है। कामकी शकलमें या दूसरे किसी तरीक़ेसे पैसेकी पूरी क़ीमत चुकाकर पैसा पाने या भेंटकी शकलमें पैसे लेनेका हर आदमीको हक़ है। लेकिन शर्त बदनेका मतलब यह होता है कि बिना कुछ दिये कुछ पा जाना; यह दूसरेके नुक़सानसे होनेवाला फ़ायदा है।

अिसी तरह खेलोंका और शेयरबाजारका जुआ भी अिष्ट नहीं। जिनमें वायदा पटाने या नफ़े-नुक़सानकी रक़मका भुगतान करनेका सवाल हो, अैसे सब सौदे निश्चय ही समाज-विरोधी हैं। अगर आदमी जुअेकी आदतमें फँसा रहे, तो वह अुसमें भले-बुरेके विवेकका नाश करनेवाली वैसी ही और अुतनी ही तीव्र वासना पैदा करती है, जैसी और जितनी कुछ दवाअियोंकी वजहसे पैदा होती है।

कॉनराडकी अेक कहानीमें अुसके नायकको लॉटरीमें भारी अिनाम मिलता है। अेक बार अिनाम मिलनेसे अुसे यक़ीन हो जाता है कि वह दुबारा भी अिसी तरह अिनाम जीत सकता है। यह खयाल अुसे जकड़ लेता है। अुसका अेक दोस्त तानेके तौर पर कहता है कि लॉटरीका घुन अुसे कुरेदकर खा रहा है। अिसकी ताअीद करते हुअे मि० मार्टिन कहते हैं कि यह बात हजारों लोगों पर लागू होती है।

मि० मार्टिन अिस नतीजे पर पहुँचते हैं कि किसी भी अीसाअीको अपने लिअे या दूसरोंके लिअे होड़ या शर्त बदनेमें पैसे खर्च नहीं करने चाहियें।

खुद अनुभव करनेके बाद अीसाअियोंने यह सीखा कि होड़ बदना अुनके लिअे बुरी चीज है; चुनाँचे हिन्दू और मुसलमानोंके लिअे भी वह अुतनी ही बुरी चीज है। हिन्दुओंका फ़र्ज है कि वे अिस लेखके शुरूमें दी गअी वेदकी शिक्षा पर अमल करें, और मुसलमान भी पाक क़ुरानकी हिदायतको न टालें। क़ुरानमें शराबकी तरह ही जुअेकी भी सख्त निन्दा की गअी है।

"वे तुझसे नशीली चीज़ों और जुअेके बारेमें पूछते हैं। कह कि दोनों महापाप हैं।" (२-२१९)

"अे अीमानदारो, नशीली चीज़ें (शराब वग़ैरा) और जुआ . . . ये शैतानकी अज़हद कमीनी हरक़तें हैं।

"शराब व जुअेके ज़रिये शैतान तुममें आपसकी दुश्मनी और नफ़रत पैदा करने व अल्लाहकी याद व अुसकी अिबादतसे तुम्हारा मन फेरनेकी ताकमें रहता है।"

(५-१०) (अेम. पिकथॉलके तरजुमेसे)

जे० अेन० कीनीज-जैसे कट्टर अर्थशास्त्रीने भी शराब वग़ैरा नशीली चीजोंके साथ-साथ जुआ खेलनेवालोंका भी निषेध करनेकी बात सुझाअी है।

हमारे वज़ीर मि० कीनीजके सुझावको मान लें, और अंग्रेज़ी फुटबालके जुअेके हमलेका सामना करें, तो अच्छा हो। अखबारोंमें छपनेवाले अिश्तहारोंसे पता चलता है कि अिस तरहका जुआ शुरू हो चुका है।

(अंग्रेजीसे) वालजी गोविन्दजी देसाअी

पतिके लिअे कातनेवाली

पण्डित बनारसीदास चतुर्वेदी पुराने पत्रकार हैं। वे हिन्दीमें 'मधुकर' नामका अेक बढ़िया मासिक निकालते हैं। लोक-साहित्यका संग्रह करना और रचनात्मक या तामीरी कामको बढ़ावा देना अुसका मक़सद है। अुसके तीसरे सालके चौथे अंकमें 'स्वतंत्र'से लिया गया बुन्देलखण्डका अेक पुराना लोकगीत छपा है। अुस गीतमें अेक स्त्री अपने परदेश गये हुअे पतिके बारेमें अपनी सहेलीसे कहती है—

"अेजु वे न मिले ननदोके बीरना
खोभी डारी वयस हमार।
अपने अँगनवामें रहँटा बसौती
कतती नन्हो सूत।
अपने पियाको पगरी बनौती
जैसे कमलको फूल
भरी सभामें सोहे स्वामीकी पगरो
सेजियामें बिंदिया हमार।"

"हे सखी, मेरी ननदके भाअी यहाँ नहीं हैं, जिससे मेरा जीवन यों ही बीत रहा है। अगर वे यहाँ होते, तो मैं अपने आँगनमें चरखा रखकर महीन सूत कातती, और अपने स्वामीके लिअे कमलके फूल-सी पगड़ी बुनवाती। अुस पगड़ीको पहनकर वे राज-दरबारमें सोहते और मेरे सुहागकी बिन्दिया अुजली हो अुठती।"

अभी पूरे सौ साल भी नहीं हुअे, जब हमारे घरोंमें औरतें रसोअी बनातीं और कातती भी थीं। हिसार जिलेके श्री मुरलीधर 'मधुकर'में लिखते हैं कि अपने बचपनमें अुन्होंने गाँवकी लड़कियोंको जाड़ेके मौसिममें अेक जगह अिकट्ठा होकर धूपमें बैठते और कातते देखा है। अिस तरह धूपमें बैठकर कातनेको 'धूपिया' और गरमियोंमें रातको मिलकर की जानेवाली कताअीको 'सुरतिया' कहनेका रिवाज था। लड़कियाँ अेक साथ बैठकर कातती और गाती थीं। हिसारमें आज भी लड़कीको दहेजमें चरखा और हाथ-कते, हाथ-बुने कपड़े देनेका रिवाज मौजूद है।

(गुजरातीसे) वालजी गोविन्दजी देसाअी

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

२४ नवम्बर १९४६

श्रद्धाका साहस

पिछले बुधवारको बड़े सबेरे गांधीजीने अपने साथियोंको अेक अहम फ़ैसलेकी खबर दी। अुन्होंने कहा — "मैंने तय किया है कि आप लोगोंके दलको बिखेर दूँ, और आपमेंसे हरअेकको अुन गाँवोंमें भेज दूँ, जिन पर दंगोंका असर पड़ा है। आपके साथकी बहनें भी अिसी तरह अेक-अेक गाँवमें जाकर रहेंगी। आप सबको अपने पसन्द किये हुअे गाँवकी कम तादादवाली हिन्दू आबादीके जान-मालकी हिफ़ाज़तके लिअे बतौर बयानेके अपने-अपने गाँवमें रहना होगा। आपको यह प्रतिज्ञा करनी होगी कि ज़रूरत पड़ने पर आप अपनी जान क़ुरबान करके भी हिन्दू आबादीकी हिफ़ाज़त करेंगे। मेरा यह फ़ैसला आपमेंसे किसीके लिअे बन्धनकारक नहीं। जो चाहें वे यहाँसे अलग होकर अपनेको मेरे किसी रचनात्मक काममें लगा सकते हैं। साथ ही, जिनके दिलमें मुसलमानोंके लिअे दुश्मनीका खयाल हो, या अिस्लामके लिअे आदर न हो, या जो कुछ हो चुका है, अुसकी वजहसे जो लोग अपने गुस्सेको क़ाबूमें न रख सकते हों, वे सब अिस कामसे दूर रहें। अैसे लोग मेरी अिस योजनामें शामिल होकर मेरे बारेमें फ़ज़ूल ही ग़लतफ़हमी पैदा करेंगे।

"जहाँ तक मेरा अपना ताल्लुक़ है, मेरा यह फ़ैसला आखिरी फ़ैसला है, और अब अिसमें कोअी फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। जब तक पूरबी बंगालके हिन्दू और मुसलमान अमन-चैनके साथ हिलमिलकर रहना नहीं सीखते, तब तक मैं यहीं गड़ा रहूँगा। अपने सभी नज़दीकी साथियोंकी सेवाका त्याग करके जहाँ जैसी मुक़ामी मदद मुझे मिलेगी, अुसीसे मैं अपना काम चला लूँगा।"

अुसी दिन शामको गांधीजीने अपने साथियोंको अिस फ़ैसलेके बारेमें अपने खयाल ज़्यादा तफ़सीलसे समझाये। बादमें बहस शुरू हुअी। श्री ठक्कर बापा और श्रीमती सुचेता कृपालानीने भी अुसमें भाग लिया। अपनी दलील पेश करते हुअे गांधीजीने समझाया — "अगर मैं यह क़दम न अुठाअूँ, तो मेरी अहिंसा अधूरी रहे। अहिंसा या तो जीवनका नियम है या नहीं है। मेरे अेक दोस्त कहा करते थे कि पतंजलिके योगदर्शनका **अहिंसा-प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः** (अहिंसाकी सिद्धि होने पर अुसके पास जानेवालेकी वैरबुद्धि शान्त हो जाती है), अहिंसाके बारेमें लिखा गया यह सूत्र अेक बड़ी ग़लती है, और अुसमें सुधार करनेकी ज़रूरत है; और, **अहिंसा परमोधर्मः**, अिस वचनको भी अिसमेंके पहले अ को निकालकर **हिंसा परमोधर्मः** की शकलमें पढ़ना और समझना चाहिये। अुनकी बातका मतलब यह था कि मनुष्यका सबसे श्रेष्ठ धर्म अहिंसा नहीं, बल्कि हिंसा है। चुनाँचे अगर अैन कसौटीके वक़्त अहिंसाके क़ानूनके बारेमें मेरी श्रद्धा डिग जाय, तो मुझे अपने अुन दोस्तकी सुझाअी हुअी वाहियात तरमीम मंज़ूर कर लेनी पड़े।

"शायद मैं बंगालकी बहनोंको ख़ुद बंगालियोंसे भी ज़्यादा पहचानता हूँ। बंगालका स्त्रीत्व आज दब गया है और लाचार बन गया है। मेरा और मेरे साथियोंका बलिदान अुन्हें कम-से-कम अिज़्ज़तके साथ मौतका सामना करनेकी कला तो सिखायेगा ही न? और मुमकिन है कि हमारी अिस क़ुरबानीसे ज़ुल्म ढानेवालोंकी आँखें खुल जायँ और अुनके दिल पसीजें। बेशक, अिसका यह मतलब नहीं कि अिधर मेरी आँखें मुँदेंगी और अुनकी खुल जायँगी। लेकिन मुझे अिसमें कोअी शक नहीं कि आखिर अिसका नतीजा तो यही होनेवाला है। अगर अहिंसा मिट गअी, तो अुसके साथ हिन्दूधर्म भी मिट जायगा।"

साथियोंमेंसे अेकने दलील की— "आज अिन झगड़ोंकी जड़ धार्मिक या मज़हबी नहीं, बल्कि राजनीतिक या सियासी है। आजकलकी यह लड़ाअी हिन्दुओंके खिलाफ़ नहीं, बल्कि कांग्रेसके खिलाफ़ है।"

"आप यह क्यों नहीं देखते कि वे लोग कांग्रेसको सिर्फ़ हिन्दुओंकी संस्था मानते हैं? साथ ही, आप यह क्यों भूल जाते हैं कि मेरे नज़दीक जीवन धार्मिक, राजनीतिक या अैसे दूसरे हिस्सोंमें बँटा हुआ नहीं है? हम शब्दोंकी भूलभुलैयामें न फँसें। सवाल तो अेक ही है — यह अुलझन कैसे सुलझाअी जाय? हिंसासे या अहिंसासे? अिसे दूसरी तरह कहूँ, तो मैं यों कहूँगा कि आज मेरे तरीक़े में कोअी दम है या नहीं?"

साथियोंमेंसे अेकने कहा — 'जो लोग आपका ख़ून पीनेको तैयार हैं, अुनके साथ दलील कैसे की जाय? अुन्हें किस तरह समझाया जाय? अभी अुस दिन हमारा अेक कार्यकर्त्ता मार डाला गया।"

गांधीजीने जवाब दिया — "सो मैं जानता हूँ। गुस्सेकी अिस आगको बुझाना ही तो हमारा काम है।"

साथियोंमेंसे दूसरे अेक साथीने पूछा — "आज यहाँके गाँवोंमें लौटकर आने और रहनेमें भारी खतरा है। अैसी हालतमें क्या भागकर गये हुअे लोगोंसे यह कहना ठीक होगा कि वे सब अपने-अपने गाँवोंको लौट आयें और वहीं रहें?" गांधीजीने जवाब दिया — "लोग जिन गाँवोंमें लौटनेवाले हों, अुन गाँवोंके मुसलमान अिकट्ठा होकर अुनकी सुरक्षाकी गारण्टी दें, और अिस तरह सब मुसलमानोंकी मिली-जुली गारण्टीकी अेक भला हिन्दू और अेक भला मुसलमान ताअीद करे, और वे दोनों अुसी गाँवमें रहें, और ज़रूरत पड़ने पर अपनी जान देकर भी लौटे हुअे लोगोंकी हिफ़ाज़त करें, तो लोगोंको अपने-अपने गाँवोंमें वापस जानेकी सलाह देनेमें कोअी खतरा या नुक़सान नहीं। अितनी गारण्टी मिलने पर गाँव छोड़कर भागे हुअे लोगोंको वापस अपने गाँवमें जाना ही चाहिये, और वहाँ जो खतरा या डर हो अुसका मुक़ाबला करना चाहिये। अिन शर्तोंके साथ गारण्टी मिलने पर भी अगर हिन्दू अपने गाँवोंमें लौटनेको तैयार न हुअे, तो याद रखिये कि पूरबी बंगालमें हिन्दू धर्मका नाम-निशान भी न रहेगा।" पूरबी बंगालका सवाल अकेले बंगाल प्रान्तका सवाल नहीं। आज पूरबी बंगालमें समूचे हिन्दुस्तानकी लड़ाअी लड़ी जा रही है; वहाँ सारे हिन्दुस्तानके भविष्यका फ़ैसला हो रहा है। आज मुसलमानोंको यह सिखाया जा रहा है कि हिन्दुओंका धर्म बहुत ही नफ़रत करने लायक़ और गन्दा धर्म है, चुनाँचे हिन्दुओंको ज़बरदस्ती भ्रष्ट करके मुसलमान बनानेमें पुण्य है, और अिससे और कुछ नहीं, तो कम-से-कम यह तो होगा ही कि ज़बरदस्ती मुसलमान बनाये गये लोगोंके बच्चोंको अिस्लामने अुबार लिया है। अब अगर मुसलमानोंकी अिन करतूतोंके खिलाफ़ वैसी ही काली करतूतें करके बदला लेनेका अुसूल अपनाया जाता है, तो अुन पर फ़तह पानेके लिअे हिन्दुओंको अुन सब बुरे कामोंके करनेमें कमाल हासिल करना पड़ेगा, जो मुसलमानोंने किये कहे जाते हैं। मित्र राष्ट्र हिटलरके खिलाफ़ अुसीके हथियारोंसे लड़ने निकले, और आखिर सवाअी हिटलर बनकर रहे।

गांधीजीसे पूछा गया आखिरी सवाल यों था — "जब तक अिन गाँवोंमें दंगोंके दिनोंमें मार-पाट और लूट-पाट वग़ैरा करनेवाले लोग आज़ादीसे घूमते-फिरते हैं, तब तक लोग आश्वस्त कैसे हों? हम अुन्हें किस मुँहसे कहें कि वे भरोसा रक्खें?"

अिस सवालका जवाब देते हुअे गांधीजीने कहा — "अिसीलिअे तो मैंने अिस बातका आग्रह रक्खा है कि जो लोग लौटें, अुनके जान-मालकी हिफ़ाज़तके लिअे अेक भले हिन्दू के साथ अेक भले मुसलमानको भी ज़ामिन बनकर रहना चाहिये। बंगाल सरकारकी हुकूमतको संभालनेवाले मुस्लिम लीगियोंको चाहिये कि वे अैसे लोगोंको खड़ा करनेकी जिम्मेदारी अपने सिर लें।"

www.vinoba.in

दत्तपाड़ासे अेक मित्रको लिखे पत्रमें गांधीजीने लिखा था — “आज मैं यहाँ जिस काममें लगा हूँ, वह शायद मेरी जिन्दगीका आखिरी काम हो; अगर मैं यहाँसे बिलकुल सही-सलामत और ज़िन्दा वापस लौटा, तो मैं अुसे अपना नया जन्म मानूँगा। यहाँ मेरी अहिंसाकी पूरी-पूरी और अैसी कसौटी हो रही है, जैसी पहले कभी नहीं हुअी थी।”

क़ाज़िरखिल, १६-११-’४६

(अंग्रेज़ीसे) प्यारेलाल

अकालसे लड़नेवाला अेक हिन्दुस्तानी गाँव

बेलगट्टा, दक्खिन हिन्दुस्तानकी दक्खिनी अूँची चौरस ज़मीन पर बसा हुआ अेक नमूनेका गाँव है। वह कन्याकुमारीसे ४०० मील दूर, पच्छिमी घाटसे १०० मीलसे अूपर और पूरबी घाटसे क़रीब २०० मीलकी दूरी पर बसा हुआ है। वहाँ साल भरमें २० अिंचसे कुछ ज़्यादा बारिश होती है। बेलगट्टा पूरी तरह खेती पर गुज़र करनेवाला गाँव है। मामूली दिनोंमें वहाँके लोग खास तौर पर ज्वार, बाजरा और दालें पैदा करके अुन पर गुज़र करते हैं। जिनमें आम, केला व कभी-कभी ताड़ी के और बढ़ जानेसे अुनका काम अच्छी तरह चल जाता है। वहाँके किसान थोड़ी कपास, मूँगफली, रेंडी व दूसरे तेल के बीज भी अुगा लेते हैं, और अिन चीज़ोंको बेचकर वे कपड़ा, चावल व थोड़ी दूसरी चीज़ें खरीदते हैं। ये चीज़ें भी अुन्हें ज़्यादा तो नहीं मिलतीं, लेकिन भगवान्‌की दयासे अुनका काम ज्यों-त्यों चल जाता है।

यह तो मामूली दिनोंकी बात हुअी। लेकिन जब सभी कुछ मौसिम पर मुनहसिर हो, तब ये मामूली दिन भी कभी-कभी ही देखनेको मिलते हैं। सन् १९४५का साल सबसे ज़्यादा ग़ैरमामूली साल था। अिस साल बरसात बिलकुल नहीं हुअी। खेतोंमें बोये हुअे बीज सूख गये। ढोर भूखों मरने लगे। लड़ाअीके दिनोंकी संकुचित नीतिके सबबसे पिछले सालोंमें बचाया हुआ सारा ग़ल्ला काममें ले लिया गया था। और अब अकालका सामना करनेके लिअे गाँववालोंके पास न बचतमें कुछ था, और न भविष्यमें जल्दी कुछ पानेकी अुम्मीद ही अुन्हें थी। क़रीब बारह महीनों तक भुखमरीका भूत गाँवके आसपास मँडराता रहा; कभी-कभी तो वह बहुत नज़दीक आया-सा लगता था। लेकिन आज वह बहुत दूर है, क़रीब-क़रीब हद छोड़कर चला गया है। न सिर्फ़ नअी फ़सल अच्छी आअी है, बल्कि वह काटने लायक़ भी हो गअी है। अिसके सिवा, स्टेट (मैसूर स्टेट, जिसमें बेलगट्टा गाँव बसा है) की सरकारने बड़ी धीमी और निराशाजनक शुरुआतके बाद ठीक आखिरी वक़्तमें ज़रूरतमन्द लोगोंको खाना देनेका काफ़ी अिन्तज़ाम कर दिया है।

अकेली मैसूर रियासत अिस कामको कर न सकती। लोगोंको राशन बाँटनेका अिन्तज़ाम तो बेलगट्टामें ही किया गया था, लेकिन अनाज बहुत दूर-दूरसे मँगाना पड़ा। बेलगट्टासे क़रीब ५० मील दूर पच्छिमी मैसूरमें पछाँही हवा हर साल तिगुनी या चौगुनी बारिश लाती है। सन् १९४५में वहाँ हमेशाकी ही तरह बारिश हुअी थी। अिसलिअे वहाँ थोड़ा चावल बचतमें था, मगर वह भी जल्द ही खत्म हो गया। दक्खिनके दूसरे सैकड़ों गाँवोंकी तरह बेलगट्टाको भी अनाजके लिअे हिन्दुस्तानके दूर-दूरके सूबों और समंदर पारके मुल्कोंकी तरफ़ ताकना पड़ा। जिस गाँवके रहनेवालोंने कभी समंदर या कोअी बड़ा शहर तक नहीं देखा था, अुसकी रक्षा कअी महाद्वीपोंके सम्मिलित प्रयत्नसे हुअी। आअिये, अब हम गाँवका अनाज-गोदाम देखें। वहाँ हमें आस्ट्रेलियन गेहूँके आटेके भरे हुअे थैले, कनाडाके गेहूँ, और अमेरिकाकी मका दिखाअी देगी। हाल ही आये हुअे जिस मालको मुक़ामी अफ़सर बड़ी अुत्सुकतासे देख रहे थे, वह था, ‘मिस्रका बाजरा’। जब थैले खोले गये तो अुनमें कोअी अनजानी और बेस्वाद चीज़ नहीं निकली, बल्कि गाँववालोंकी जानी-पहचानी वह ज्वार या जोला ही निकली, जिसके अूँचे और भूरे भुट्टे अब गाँवके चारों तरफ़ खेतोंमें हिल रहे हैं, और किसानोंको आशाका संदेश दे रहे हैं। थोड़े दिन पेश्तर ही यहाँ बरमाके चावल भी आये हैं। आसाम, हैदराबाद और सिन्ध-जैसे हिंदुस्तानके सूबों और रियासतोंने, जहाँ सालभरकी खपतके बाद अनाज बच जाता है, अपने हिस्सेका ग़ल्ला बेलगट्टा भेजा है। बेलगट्टा-जैसे छोटेसे गाँवको भुखमरीसे बचानेके लिअे सारी दुनियाने हाथ बँटाया है।

पोस्ट मास्टरके घर कॉफी पीते-पीते मैं अिस पर विचार कर ही रहा था कि अचानक अुन्होंने यह कहकर कि “भगवान्‌ने दया करके ठीक वक़्त पर यहाँ बारिश भेजी है” मुझे सोचनेके लिअे दूसरा ही मसाला दे दिया। अब चूँकि अिन लोगोंका डर अुम्मीदमें बदल गया है, अिसलिअे ये लोग आस्ट्रेलिया, अमेरिका, अीजिप्त या बरमाका आभार नहीं मानते, बल्कि भगवान्‌को धन्यवाद देते हैं।

अिस गाँवकी कुछ दूसरी खासियतें भी मुझे पसन्द आअीं। दो शरमीली और खामोश बच्चियाँ मेरे सामने लाअी गअी थीं। अुनमेंसे अेकको खुजली वग़ैराकी और दूसरीको बदहज़मीकी बीमारी थी, और दोनोंको लगातार विटामिनकी गोलियाँ देकर अच्छा किया गया था। गाँवमें अिस तरह अच्छी हुअी दूसरी कअी लड़कियाँ थीं। बादमें मेरे अेक साथीने गाँवमें रहनेवाले अेक नौजवान डॉक्टरसे मेरी पहचान कराअी। जब कि दूसरे कअी हिन्दुस्तानी डॉक्टर धनवान और अच्छी फीस देनेवाले शहरवालों पर ही अपना पूरा ध्यान देते हैं, यह भाअी गाँवमें ही रहते हैं, और ५ गाँवोंकी सेवा करते हैं। मैंने अुनसे पूछा — “क्या अनाजकी तंगीके कारण बीमारियाँ बढ़ गअी हैं?” जवाब मिला — “हाँ, अिससे खास करके चमड़ीके रोग और पेटकी बीमारियाँ ज़्यादा बढ़ी हैं”। अिसके कोअी घंटेभर बाद जब अेक अूँचे दरजेके डॉक्टरने, जो तीन साल तक यूरोपमें फ़ौजकी नौकरी कर चुके हैं, मुझे यक़ीन दिलाया कि पाँच हफ़्तोंसे वे .खुराककी खराब-से-खराब हालतवाले जिलोंमें दौरा कर रहे थे, लेकिन थोड़ी-बहुत खुजलीके सिवा और किसी बीमारीके बढ़नेका कोअी सबूत अुन्हें नहीं मिला, तो अुस वक़्त मुझे यह फ़ैसला करनेमें कोअी मुश्किल नहीं हुअी कि दो डॉक्टरोंकी राय अेक-दूसरेके खिलाफ़ होने पर किसे मानना चाहिये। लेकिन अिन फ़ौजी डॉक्टरके साथ अिन्साफ़ करनेके लिअे हमें अुनको और अुनके मातहतोंको अिसलिअे धन्यवाद देना चाहिये कि जब लोग आधे भूखे रहते थे और कअी जगहों पर पीनेके लिअे अच्छा पानी भी मुश्किलसे मिलता था, तब भी कोअी भारी रोग या महामारी नहीं फैलने पाअी।

बेलगट्टा अेक अुम्मीद दिलानेवाला गाँव है, और आज वह दूसरे अैसे गाँवोंसे घिरा हुआ है, जिन्हें देखकर अुम्मीद बढ़ती है। मगर यह ज़िला ही तो पूरा हिन्दुस्तान नहीं! ज्वार और बाजरा, जो दक्खिनके अिन गाँवोंका खास भोजन है, क़रीब-क़रीब पक गये हैं। लेकिन यहाँसे सिर्फ़ दो सौ मीलकी दूरी पर रहनेवाले मद्रासी किसान अभी भी बहुत कम राशन पर किसी तरह जी रहे हैं। अुनके पास चावलकी कमी है। मैसूरमें भी ‘और चावल भेजो’ की पुकार अुठती है। दक्खिन हिन्दुस्तानका चावल १९४७के जनवरी महीनेके पेश्तर बाजारमें बेचने लायक़ नहीं हो सकेगा। अिस बीच समंदर पारके बरमा, स्याम व जावा देशोंसे कभी-कभी चावलोंसे भरे हुअे जहाज़ आते हैं, और आसाम, अुड़ीसा या अुत्तर हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंसे भी थोड़ा चावल आ जाता है। क्या अिन लाखों-करोड़ों अिनसानोंको ज़िन्दा रखनेके लिअे कभी-कभी आ जानेवाले चावलोंकी अिस धाराको जारी रखा जा सकेगा, और क्या अमेरिकासे आनेवाले गेहूँ अुनमें शामिल

www.vinoba.in

किये जा सकेंगे ? भगवान् ही जाने । मगर दक्खिनी हिन्दुस्तानके और अुसे लगातार रहनेवाली अनाजकी जरूरतके पीछे समूचे बंगालको छूनेवाला अेक बड़ा सवाल मौजूद है । पूरे दक्खिनी हिन्दुस्तानमें बच्चोंको दूध और विटामिनकी गोलियाँ ज़्यादा तादादमें बाँटकर अकालके खतरेको रोका जा रहा है । पिछले हफ़्ते मैंने त्रावणकोरमें कअी अैसे बच्चोंको देखा, जो अपने पासका दूध पी चुकनेके बाद और दूध माँग रहे थे । लेकिन आज भी वहाँ चावल और गेहूँकी पुकार मची हुअी है । अभी भी हरअेक मुल्कके लोगोंको यह समझानेकी जरूरत है कि वे दूर देशोंमें रहनेवाले अपने अजनबी भाअियोंकी मदद करें। अिस कामके लिअे अुनके दिल, दिमाग़ और अिरादोंको तैयार करनेवाले अीश्वरका हमें अेहसान मानना चाहिये ।

चीतलदुर्ग, सितम्बर, १९४६ होरेस अलेक्ज़ैण्डर

[अीश्वरको धन्यवाद देकर खत्म होनेवाले अिस मज़मूनमें मैं सिर्फ़ अितना ही जोड़ना चाहता हूँ कि अीश्वर अुन्हींकी मदद करता है, जो अपनी मदद खुद करते हैं। देहातियोंको यह सिखाया जाय कि वे खुद ही ज़्यादा अनाज पैदा करें। अुस हालतमें बाहरसे भी मदद मिलेगी और वह .खुशी-खुशी लेने लायक़ होगी ।

कलकत्ता जाते हुअे रेलमें, २९-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) मो० क० गांधी]

शराबबन्दीकी साखियाँ

(अंक ३३से आगे)

[नीचेकी दसवीं साखीके लिअे मैं मैक्डानल और कीथकी 'वेदिक अिण्डेक्स' नामकी किताबका क़र्ज़दार हूँ । ११वींके लिअे अेस० हिक्सकी 'डिफिकल्टीज़' (डकवर्थ)का; १३वींके लिअे मॉस्लेकी 'नाअिट हॉण्ट्स ऑव् लण्डन' (अेस० पॉल)का; १४वींके लिअे हीरालाल जादवराय बूचकी 'देवी भागवत'का (जी० अेम० वैद्य); और १६वीं, १७वीं और १८वींके लिअे नार्मन अी० रिचर्डसनकी 'दि लिकर प्रॉब्लेम' नामकी किताब (मेथोडिस्ट बुक कन्सर्न, न्यूयार्क)का क़र्ज़दार हूँ — वा० गो० देसाअी]

१०

सुरां पिबन् . . . ब्रह्महा चैते पतन्ति ।

छान्दोग्य अुपनिषत् (५-१०-९)

"ब्राह्मणको मारनेवाला और शराबी . . . दोनोंकी बुरी गत होती है ।"

११

"अेक लम्बे अरसे तक जजका काम करते हुअे मेरे सामने जो जुर्म आये, अुनमेंसे ९५ फ़ीसदी नहीं, बल्कि ९९ फ़ीसदी जुर्मोंके लिअे शराबखोरी ही ज़िम्मेदार है।" — लॉर्ड ब्रम्पटन

१२

"यूरोपके बालिग लोगोंकी आधीसे ज़्यादा बीमारियों और वक़्तसे पहले होनेवाली मौतोंके लिअे सिफलिस और शराबका नशा ये दोनों ही ज़िम्मेदार हैं ।"

— अी० रे० लैंकेस्टर ('किंगडम ऑव् मैन'में)

१३

"अिनसानको व्यभिचारकी आर ले जानेमें शराबखोरीका खास हाथ है ।"

— व्यभिचारकी वजहसे होनेवाले गरमीके रोगोंको रोकनेवाली नैशनल कौन्सिल

१४

प्रभासे यादवाः सर्वे . . . ॥ ३ ॥
ते पीत्वा मदिरां मत्ताः कृत्वा युद्धं परस्परम् ।
क्षयं प्राप्ताः महात्मानः पश्यतो रामकृष्णयोः ॥ ४ ॥

— देवी भागवत, २-८

"प्रभासमें यादवलोग शराब पीकर पागल हो गये, और आपसमें लड़कर कट मरे । यह सब बलराम और कृष्णके सामने हुआ, लेकिन वे कुछ न कर सके ।"

१५

"लड़ाअीकी बनिस्बत शराब ज़्यादा लोगोंको मारती है, और सो भी बड़ी बेअिज़्ज़तीके साथ ।" — कार्डिनल मर्सियर

१६

"कअी शराबख़ाने औरतोंसे वेश्याका पेशा करवाकर अुससे होनेवाली आमदनी पर निभते हैं ।"

— नॉर्थ अमेरिकन वाअिन अेण्ड स्पिरिट जर्नल (मार्च, १९१३)

१७

"जिन्दगी और मौतके बीच होनेवाली रस्साकशीमें शराबखोरी क़ब्रकी तरफ़ अपनी ताक़त ख़र्च करती है ।"

१८

"अगर मुल्कसे शराबखोरीको जड़मूलसे मिटाया जा सके, तो अिस अदालतके दरवाज़े किसी क़दर लम्बे वक़्त तक बन्द ही रहें ।"

— लॉर्ड गोरेल, प्रेसिडेण्ट ऑव् अिंग्लिश डाअिवोर्स कोर्ट

(अंग्रेज़ीसे)

हफ़्तेवार ख़त

गांधीजी तीसरे दरजेके मामूली डब्बेमें बैठकर नोआखाली जाना पसन्द करते, लेकिन बंगाल-सरकारने अुनके लिअे अेक ख़ास ट्रेनका अिन्तज़ाम कर दिया था । बंगाल सरकारने अपने ब्योपार विभागके वज़ीर शमसुद्दीन साहब और बंगालके वज़ीरेआज़मके पार्लमेण्टरी सेक्रेटरी नसरुल्लाख़ाँ साहब और अब्दुर रशीद साहबको भी गांधीजीके साथ भेजा था । गांधीजीके आराम और सुभीतेका अिन्तज़ाम करने और ज़रूरत पड़ने पर अुन्हें सरकारी मदद पहुँचानेके ख़यालसे ख़ुद वज़ीरेआज़म ही गांधीजीके साथ नोआखाली जाना चाहते थे, लेकिन अुन्हें कलकत्तेमें रुक जाना पड़ा । शमसुद्दीन साहबके कुष्टिया गाँवमें और हाकपुर व गोआलन्दोमें लोगोंकी ज़बरदस्त भीड़ अिकट्ठा हुअी थी । अिन सब जगहोंमें गांधीजीने अपनी अिस मुलाक़ातके मक़सदको समझाते हुअे मुख्तसर तक़रीरें कीं ।

गांधीजीने कहा — "बिलकुल बचपनसे सभी क़ौमोंके लोगोंके साथ मेरी दोस्ती रही है । मैंने हिन्दू, मुसलमान, पारसी और दूसरी क़ौमोंमें कभी कोअी फ़र्क़ नहीं किया । अपने बचपनमें जब मैं राजकोटके हाअीस्कूलमें पढ़ता था, अुस वक़्तका अैसा अेक भी मौक़ा मुझे याद नहीं आता, जब स्कूलमें पढ़नेवाले पारसी या मुसलमान लड़कोंके साथ मेरा झगड़ा हुआ हो ।

"ख़िलाफ़त आन्दोलनके दिनोंमें मैं हमेशा यह कहा करता था कि मौलाना शौकतअली तो मुझे अपनी जेबमें लिये घूमते हैं । मैं लड़ना नहीं चाहता । लेकिन साथ ही अिज़्ज़त या स्वाभिमानकी क़ीमत पर मिलनेवाली शान्ति भी मुझे पसन्द नहीं । मैं वह शान्ति चाहता हूँ, जिसमें दोनों दलोंकी अिज़्ज़त बनी रहे । अगर दोमेंसे कोअी भी दल बुरा काम करे, तो मैं अुसके मुँह पर यह बात कहते हिचकिचाअूँगा नहीं । अिसमें मित्रताका सुख और कर्तव्य है । मैं जीवनभर लड़ता रहा हूँ, और अपने आख़िरी दम तक मैं ज़ुल्म और अन्यायके ख़िलाफ़ लड़ता रहूँगा, फिर अन्याय करनेवाला कोअी भी क्यों न हो ?

"आपको याद होगा कि ख़िलाफ़त आन्दोलनके दिनोंमें मैंने पूरबी बंगालका दौरा किया था । वह हिन्दू-मुस्लिम अेकताका ज़माना था । अुस वक़्त हिन्दू-मुसलमान दोनों कांग्रेसको अपनी कहनेका दावा करते थे — दोनोंमें अिसके लिअे होड़ लगती थी । कांग्रेस तो सबकी है । लेकिन अिस बार मैं एक कांग्रेसीके नाते पूरबी बंगाल नहीं जा रहा । मैं तो अेक ख़ुदाअी ख़िदमतगारकी तरह ही वहाँ जा रहा हूँ । अगर मैं अत्याचारोंका शिकार बनी हुअी नोआखालीकी बहनोंके आँसू पोंछ सका, तो अुससे मुझे ज़्यादा सन्तोष होगा ।

"हम हिन्दू हों या मुसलमान, सभी हिन्दुस्तानी हैं । आज़ाद हिन्दुस्तानमें हम अेक-दूसरेके दुश्मन बनकर नहीं रह सकते। हमें आपसमें दोस्त और भाअी बनकर ही रहना चाहिये । नोआखाली

www.vinoba.in

जाकर मैं वहाँ तब तक ठहरूँगा, जब तक वहाँके हिन्दू और मुसलमान पहलेकी तरह फिर सगे भाअी-से बनकर रहने न लगें। अुन्हें हमेशा अपना यही सम्बन्ध बनाये रखना चाहिये।

"मुझे अुम्मीद है कि मेरे अिस दौरेका अच्छा असर पड़ेगा, और हिन्दुओं व मुसलमानोंके बीच खिलाफ़तके दिनोंकी अेकता फिर क़ायम हो सकेगी। खिलाफ़तके दिनोंमें हिन्दुस्तानके टुकड़े करनेकी बात कोअी कहता नहीं था। लेकिन आज अैसी बातें कही जा रही हैं। मान लीजिये कि हिन्दुस्तानके टुकड़े करना अिष्ट हो, तो भी वह मक़सद अिस तरीक़ेसे हासिल नहीं किया जा सकता। जिनका अिस मसलेसे ताल्लुक़ है, अुनमें आपसी मेल और मुहब्बत न हो, तो यह चीज़ टिक नहीं सकती। बंगालके वज़ीरोंने मुझे यक़ीन दिलाया है कि मुसलमान ज़ोर-ज़बरदस्तीसे पाकिस्तान नहीं लेना चाहते।"

गोआलन्दोमें गांधीजी स्टीमर पर सवार हुअे और पद्मा नदीका अस्सी मीलका रास्ता तय करके शामको चाँदपुर पहुँचे। बुज़ुर्ग कांग्रेसी स्व० बाबू हरदयाल नागके जन्मस्थान चाँदपुरको देखकर कअी पुरानी यादें ताज़ा हो अुठीं। यहाँ मुस्लिम लीगियों और हिन्दुओंके दो डेपुटेशन गांधीजीसे मिले। लेकिन अिन मुलाक़ातोंका पूरा बयान तो मुझे अपने अगले खत तक मौक़ूफ़ रखना होगा। दो बजे दिनको गांधीजीकी पार्टी चौमुहानी पहुँची। गांधीजीने फ़िलहाल अिसे अपना सदर मुक़ाम बनाया है।

सब रोगोंका अिलाज

लक्शम नामके गाँवमें दंगेकी वजहसे बे-घर-बार हुअे लोगोंकी छावनी है। रेलवे प्लेटफॉर्म पर जो लोग गांधीजीका दर्शन करने और अुनकी तक़रीर सुननेके लिअे अिकट्ठा हुअे थे, अुनकी मारफ़त निराश्रितों तक अपनी बात पहुँचानेके ख़यालसे गांधीजीने दो शब्द कहे — "अिस बार मैं तूफ़ानी प्रचारके अिरादेसे यहाँ नहीं आया हूँ। मैं तो आपका ही बनकर आप लोगोंके साथ रहनेके लिअे यहाँ आया हूँ। मुझमें संकुचित प्रान्तीयता नहीं। मैं तो हिन्दुस्तानी होनेका दावा करता हूँ, अिसलिअे गुजराती होते हुअे भी मैं बंगाली भी हूँ। मैंने मन-ही-मन यह अहद कर लिया है कि जब० तक आपसी बैर और दुश्मनीको हमेशाके लिअे दफ़ना नहीं दिया जाता, और जब तक अिक्की-दुक्की हिन्दू लड़की मुसलमानोंके बीच बेधड़क घूमने-फिरने नहीं लगती, तब तक मैं यहीं रहूँगा और ज़रूरत हुअी तो यहीं मरूँगा।"

गांधीजीने आगे कहा — "अगर आप अपने दिलसे डरको दूर कर दें, तो मैं कहूँगा कि आपने मेरी बहुत मदद की। लेकिन वह कौनसी जादूअी चीज़ है, जो आपके अिस डरको भगा सकती है? वह है, रामनामका अमोघ मंत्र। शायद आप कहेंगे कि रामनाममें आपको विश्वास नहीं। आप अुसे नहीं जानते, लेकिन अुसके बग़ैर आप अेक साँस भी नहीं ले सकते। अुसे आप चाहे अीश्वर कहिये, अल्लाह कहिये, गॉड कहिये, या यहुरमज़्द कहिये। दुनियामें जितने अिनसान हैं, अुतने ही अुसके बेशुमार नाम हैं। विश्वमें अुसके जैसा दूसरा कोअी नहीं। वही अेक महान् है, विभु है। दुनियामें अुससे बड़ा और कोअी नहीं। वह अनादि, अनन्त, निरंजन और निराकार है। मेरा राम अैसा है। अेक वही मेरा स्वामी और मालिक है।"

गांधीजीने रुँधे हुअे कंठसे अिस बातका ज़िक्र किया कि बचपनमें वे बहुत डरपोक थे, और परछाँहींसे भी डरा करते थे। अुन दिनों अुनकी आया रम्भाने अुन्हें डर भगानेके लिअे रामनामका मंत्र सिखाया था। गांधीजीने कहा — "रम्भा मुझसे कहती — 'जब डर मालूम हो, रामका नाम लिया करो। वह तुम्हारी रक्षा करेगा'। अुस दिनसे रामनाम सब तरहके डरोंके लिअे मेरा अचूक सहारा बन गया है।

"राम पवित्र लोगोंके दिलमें हमेशा रहता है। जिस तरह बंगालमें श्री चैतन्य और श्री रामकृष्णका नाम मशहूर है, अुसी तरह काश्मीरसे कन्याकुमारी तक हरअेक हिन्दू घर जिनके नामसे वाक़िफ़ है, अुन भक्त-शिरोमणि तुलसीदासने अपने अमर महाकाव्य रामायणमें हमको रामनामका मंत्र दिया है। अगर आप रामनामसे डरकर चलें, तो दुनियामें आपको, क्या राजा क्या रंक, किसीसे डरनेकी ज़रूरत न रह जाय। 'अल्लाहो अकबर' की पुकारोंसे आपको क्यों डरना चाहिये? अिस्लामका अल्लाह तो बेगुनाहोंकी हिफ़ाज़त करनेवाला है। पूरबी बंगालमें जो वारदातें हुअी हैं, पैग़म्बर साहबका अिस्लाम अुन्हें मंज़ूर नहीं करता।

"अगर अीश्वरमें आपकी श्रद्धा है, तो किसकी ताक़त है कि आपकी औरतों और लड़कियोंकी अिज़्ज़त पर हाथ डाले? अिसलिअे मुझे अुम्मीद है कि आप लोग मुसलमानोंसे डरना छोड़ देंगे। अगर आप रामनाममें विश्वास करते हैं, तो आपको पूरबी बंगाल छोड़नेकी बात नहीं सोचनी चाहिये। जहाँ आप पैदा हुअे और पले-पुसे, वहीं आपको रहना चाहिये और ज़रूरत पड़ने पर बहादुर मर्दों और औरतोंकी तरह अपनी आबरूकी हिफ़ाज़त करते हुअे वहीं मर जाना चाहिये। खतरेका सामना करनेके बदले अुससे दूर भागना अुस श्रद्धासे अिनकार करना है, जो मनुष्यकी मनुष्य पर, अीश्वर पर और अपने-आप पर रहती है। अपनी श्रद्धाका अैसा दिवाला निकालनेसे बेहतर तो यह है कि अिनसान डूब कर मर जाय।

"पुलिस और फ़ौजकी हिफ़ाज़तमें ही आप अपनी खैर क्यों महसूस करें? अगर आप फ़ौजियोंसे पूछें, तो वे भी आपसे यही कहेंगे कि 'अीश्वर' अुनका रक्षक है। अिसलिअे मैं चाहता हूँ कि आप शमसुद्दीन साहबसे यह कह दें कि — 'पुलिस और फ़ौजकी हिफ़ाज़तकी हमें कोअी ज़रूरत नहीं। आप अुन्हें यहाँसे हटा सकते हैं। हम तो अुस अीश्वरकी हिफ़ाज़तमें रहना पसन्द करेंगे, जिसकी रक्षा या हिफ़ाज़त सब कोअी चाहते हैं'।"

चौमुहानी

मामूली तौर पर चौमुहानीकी आबादी ५,०००से ज़्यादा की नहीं। लेकिन गांधीजीके यहाँ आनेके पहले दिन हिन्दू विद्या-मन्दिरके अहातेमें शामकी जो प्रार्थना-सभा हुअी, अुसमें क़रीब १५ हज़ार लोगोंका मजमा अिकट्ठा हुआ था। चौमुहानीके आस-पासके गाँवोंसे लोग बड़ी तादादमें आये थे। अुनमें क़रीब ८०फ़ीसदी मुसलमान थे। यह क़स्बा खुद तो बुरी-से-बुरी साम्प्रदायिक ज़्यादतियों और ज़ुल्मोंसे बचा रहा, लेकिन अिसके आस-पासका सारा हलक़ा दंगोंकी आगसे सुलगता रहा। प्रार्थनाके बाद गांधीजी क़रीब २० मिनट तक बोले, और अिस दरमियान अुन्होंने अपने दिलका सारा दर्द सभामें आये हुअे लोगोंके, और खासकर मुसलमानोंके, सामने अुँडेला। अुन्होंने कहा — "आपको याद होगा कि खिलाफ़त आन्दोलनके दिनोंमें अली भाअियोंके साथ मैं पूरबी बंगालमें घूमा था। अुन दिनों मुसलमान मेरी हर बातको सही मानते थे। जब अली भाअी औरतोंकी मीटिंगमें जाते, तो अपनी आँखों पर पट्टी बाँध लेते थे। लेकिन मुझे खुली आँखों जाने दिया जाता था। भला, अपनी माँ-बहनोंके पास जाते वक़्त मैं अपनी आँखों पर पट्टी क्यों बाँधूँ? मैं नहीं चाहता था कि मैं परदानशीन औरतोंके बीच जाअूँ। लेकिन अली भाअियोंकी ज़िद थी कि मुझे जाना चाहिये। बहनें मुझसे मिलनेको अुत्सुक थीं, और अुन्हें अिस बातका यक़ीन था कि मेरी सलाहसे अुनका भला होगा। दक्खिनी अफ़्रीकामें मैं २० बरससे भी ज़्यादा वक़्त तक मुसलमान दोस्तोंके बीच रहा हूँ। वे मुझे अपने घरका ही आदमी समझते थे, और अपनी पत्नियों और बहनोंसे कहते थे कि वे मुझसे परदा न किया करें। मैं अिंग्लैण्ड जाकर बैरिस्टरी पास कर आया था, लेकिन तोतेकी तरह क़ानूनकी जानकारी भर

www.vinoba.in

हासिल करनेवाले बैरिस्टरकी क़ीमत ही क्या ? दक्खिनी अफ्रीकाने और वहाँ शुरू की गअी मेरी सत्याग्रहकी लड़ाअीने मुझे बनाया है। सत्याग्रह और सविनय-भंग या सिविल नाफ़रमानीके हथियार मुझे वहीं मिले थे।

"आज मैं भारी दिल लेकर आपके पास आया हूँ। भारतमाताने अैसे कौनसे पाप किये हैं कि अुसके हिन्दू और मुसलमान बच्चे आज आपसमें लड़ रहे हैं? मुझे पता चला है कि आज पूरबी बंगालके कुछ हिस्सोंमें अेक भी हिन्दू औरत सुरक्षित नहीं है। जबसे मैं बंगाल आया हूँ, तभीसे मुसलमानोंके .ज़ुल्मोंकी भयंकर कहानियाँ सुन रहा हूँ। आपके बड़े वज़ीर शहीद साहबने और शमसुद्दीन साहबने क़बूल किया है कि अिन अहवालोंमें कुछ सचाअी ज़रूर है।

"मैं हिन्दुओंको मुसलमानोंसे लड़नेके लिअे अुभाड़नेको यहाँ नहीं आया। मेरा कोअी दुश्मन नहीं। मैं ज़िन्दगीभर अंग्रेज़ोंके खिलाफ़ लड़ा हूँ। फिर भी वे मेरे दोस्त हैं। मैंने कभी अुनका बुरा नहीं चाहा।

".ख़ून, आग और लूट-मारकी बात तो दूर रही; मैंने सुना है कि यहाँ ज़बरन् लोगोंका दीन-धरम बदला गया, अुन्हें ज़बरदस्ती गायका गोश्त खिलाया गया, औरतों और लड़कियोंको भगाया गया, और मुसलमानोंके साथ ज़बरन् अुनकी शादियाँ की गअीं। मुसलमानोंने मूर्तियाँ तोड़ी हैं। मैं जानता हूँ कि मुसलमान मूर्ति-पूजा नहीं करते। मैं भी नहीं करता। लेकिन जो मूर्ति-पूजा करना चाहें, मुसलमान अुसमें रुकावट क्यों डालें? ये बातें अिस्लामके नामपर कालिख पोतती हैं। मैंने क़ुरानशरीफ़को ग़ौरसे पढ़ा है। 'अिस्लाम' लफ़्ज़के मानी ही अमन या शान्तिके हैं। मुसलमान, हिन्दू या दूसरे किसीकी भी ख़ैरियत पूछनेके लिअे मुसलमानोंका अेक ही शब्द है — 'सलाम-अलैकुम'। नोआखाली और टिपरामें जो कुछ हुआ, अुसके लिअे अिस्लाम कहीं अिजाज़त नहीं देता। शहीद साहबने, सब वज़ीरोंने, और लीगी नेताओंने — जो मुझे कलकत्तेमें मिले थे — साफ़ लफ़्ज़ोंमें अैसे कामोंकी निन्दा की है। पूरबी बंगालमें मुसलमान अितनी बड़ी तादादमें रहते हैं कि मैं तो चाहूँगा कि वे कम तादादवाले हिन्दुओंके रक्षक बन जायँ। आपको हिन्दू औरतोंसे कह देना चाहिये कि आपके रहते किसीकी ताक़त नहीं, कि अुन्हें बुरी निगाहसे देखे।"

जब गांधीजीने अपनी तक़रीर ख़त्म की, तो नमाज़का वक़्त हो चुका था। हमेशाकी तरह अुनकी यह तक़रीर भी लोगोंको बँगला ज़बानमें समझाअी जानेवाली थी। लेकिन अितनेमें सभामें आये हुअे मुसलमानोंकी तरफ़से आवाज़ आअी कि थोड़ी देर सभाका काम रोक दिया जाय, ताकि वे नमाज़ पढ़ सकें और वक़्त पर बँगला तरजुमा सुननेके लिअे हाज़िर हो सकें। अैसा ही किया गया। अहातेके अेक कोनेमें नमाज़ पढ़ी गअी। अुसके बाद सबने आकर श्री सतीशबाबूसे गांधीजीके भाषणका बंगाली तरजुमा सुना।

अेक मुसलमानकी तक़रीर

दूसरे दिन प्रार्थनाके बाद शमसुद्दीन साहबने तक़रीर की। वे अपनी ज़ोरदार बँगलामें आध घण्टेसे भी ज़्यादा बोले। अुन्होंने सभामें आये हुअे लोगोंको चेतावनी देते हुअे कहा — "अगर पाकिस्तान या हिन्दुस्तानका सवाल मुस्लिम बहुमतवाले सूबोंमें हिन्दुओंको मारकर या हिन्दू बहुमतवाले सूबोंमें मुसलमानोंको मारकर हल किया जायगा, तो न पाकिस्तान रहेगा और न हिन्दुस्तान — सिर्फ़ गुलामी ही रह जायगी। अगर नोआखालीके ७५ फ़ीसदी मुसलमान पाकिस्तान चाहते हैं, तो अुनका यह फ़र्ज़ हो जाता है कि वे अपने बीच रहनेवाले २५ फ़ीसदी हिन्दुओंको अुनके जान-मालकी हिफ़ाज़तकी गारण्टी दें। अपने फ़र्ज़को समझनेवाली कोअी भी सरकार चुप-चाप बैठकर यह नहीं देख सकती कि ज़्यादा तादादवाले लोग कम तादादवालों पर ज़ुल्म ढायें या अुन्हें जड़से मिटा दें। बंगालकी मुस्लिम लीगी सरकार या बिहारकी कॉंग्रेसी सरकार, अिन दोनों सूबोंमें पिछले दिनों जो कुछ हुआ, अुसे बरदाश्त नहीं कर सकती। बंगालमें मुसलमानोंने जो कुछ किया, अुसकी वजहसे मुस्लिम लीगी सरकारको पूरबी बंगालके शहरियोंके खिलाफ़ फ़ौजका अिस्तेमाल करना पड़ा, और वे सब कार्रवाअियाँ करनी पड़ीं, जो अिस सिलसिलेमें करनी पड़ती हैं। मुस्लिम लीगने आग, लूट-मार, लड़कियोंको भगाने, ज़बरन् अुनका धरम बदलने या ज़बरन् अुनकी शादियाँ करनेकी कभी अिजाज़त नहीं दी। यह सब अिस्लामके ख़िलाफ़ है। .क़ुरानमें साफ़ कहा गया है कि मज़हबके मामलेमें ज़बरदस्ती नहीं की जा सकती। मैं आप लोगोंसे यह कहने आया हूँ कि न तो ज़बरदस्ती किसीका धर्म बदला जा सकता है, और न ज़बरदस्तीकी शादी सच्ची शादी मानी जा सकती है। अिस तरह की गअी शादियों और धर्म-परिवर्तनके अिस तमाशेसे ज़्यादतीके शिकार बने लोगोंकी हैसियत में कोअी फ़र्क़ नहीं पड़ता। ज़ोर-ज़बरदस्तीसे किसी बातका फ़ैसला नहीं होता। अमेरिकाने अेटम-बम तैयार किया और अुसकी मददसे अपने दुश्मनोंको कुचल दिया। लेकिन क्या अिससे दुनियामें अमन या शान्ति क़ायम हो सकी है? नोआखालीमें मुसलमानोंने हिन्दुओं पर ज़ुल्म ढाये हैं। चुनाँचे अुन्हें चाहिये कि वे अिस्लामके अुजले नाम पर लगे अिस दाग़को धो डालें। मैं नोआखालीके मुसलमानोंसे अपील करता हूँ कि वे हिन्दुओंको बेफ़िकर कर दें, और अुनमें अैसा विश्वास पैदा करें, जिससे वे अपने घरोंमें लौटकर अपने-आपको सहीसलामत महसूस कर सकें। आप अपनी तक़दीरको अुन गुण्डोंकी तक़दीरके साथ नहीं मिला सकते, जिन्हें अपने जुर्मोंकी सज़ा भुगतनी ही होगी। यहाँके मुसलमानोंका यह फ़र्ज़ है कि वे अुन गुण्डोंका पता लगाने और अुन्हें अदालतके सामने पेश करनेमें सरकारकी मदद करें। जो हुआ सो हुआ। लेकिन मुझे अुम्मीद है कि अिस भयंकर आगकी राखमेंसे ही बंगालमें हिन्दू-मुस्लिम अेकताकी पक्की अिमारत फिर खड़ी होगी।"

अुस रात शमसुद्दीन साहब कलकत्तेसे आये हुअे अपने साथियों और कुछ मुक़ामी मुस्लिम लीडरोंके साथ गांधीजीसे मिले और अुनके साथ बेआसरा लोगोंके सवाल पर, खासकर अुनके अपने-अपने गाँवोंको लौटनेके सवाल पर, चर्चा की। अुनमेंसे अेक दोस्तने सुझाया कि निराश्रित हिन्दुओंमें फिरसे विश्वास पैदा करनेके लिअे हिन्दू नेताओंको चाहिये कि वे मुसलमानोंकी अुस अपीलकी ताअीद करें, जिसमें निराश्रितोंसे अपने-अपने गाँवोंको लौट जानेकी प्रार्थना की गअी हो। गांधीजीने जवाब दिया — "हिन्दुओंके डर और अविश्वासका दूर करनेका यह सही रास्ता नहीं है। अुनका डर और अविश्वास वाजिब है। जब तक हर गाँवमें कम-से-कम अेक भला हिन्दू और अेक भला मुसलमान अैसा नहीं मिलता, जो हिन्दुओंके जान-मालकी हिफ़ाज़तकी गारण्टी दे और अुनके बालको आँच पहुँचनेसे पहले .ख़ुद अपनी जान .क़ुरबान करनेको तैयार हो, तब तक मैं हिन्दुओंको घर लौट जानेकी सलाह नहीं दे सकता। बंगालके वे मुस्लिम लीगी नेता, जो बंगाल सरकारके मेम्बर भी हैं, यह बता सकते हैं कि यहाँ अैसे लोग आगे आयेंगे या नहीं। नोआखालीमें जो कुछ हो चुका है, अुसके बाद लोगोंमें फिरसे विश्वास पैदा करनेका अिसके सिवा दूसरा कोअी रास्ता नहीं।" अुन सबने गांधीजीके सुझावके साथ अित्तफ़ाक़ किया और कहा कि वे अुस पर अमल करनेकी भरसक कोशिश करेंगे।

चौमुहानी, १०-११-'४६
(अंग्रेज़ीसे)

प्यारेलाल

विषय-सूची

			पृष्ठ
सच्चे दिलसे क़बूल कीजिये	...	प्यारेलाल	४०१
नागरीके स्वर	...	काका कालेलकर	४०२
घुड़दौड़ और फ़ुटबॉलका जुआ बन्द किया जाय	...	वालजी गोविन्दजी देसाअी	४०३
पतिके लिअे कातनेवाली	...	वालजी गोविन्दजी देसाअी	४०३
श्रद्धाका साहस	...	प्यारेलाल	४०४
अकालसे लड़नेवाला अेक हिन्दुस्तानी गाँव	...	हौरेस अलेक्ज़ैण्डर	४०५
शराबबन्दीकी साखियाँ	...	वालजी गोविन्दजी देसाअी	४०६
हफ़्तेवार ख़त	...	प्यारेलाल	४०६

www.vinoba.in